Chapter- 4

प्रियतम

STUDY NOTES

MIND MAP

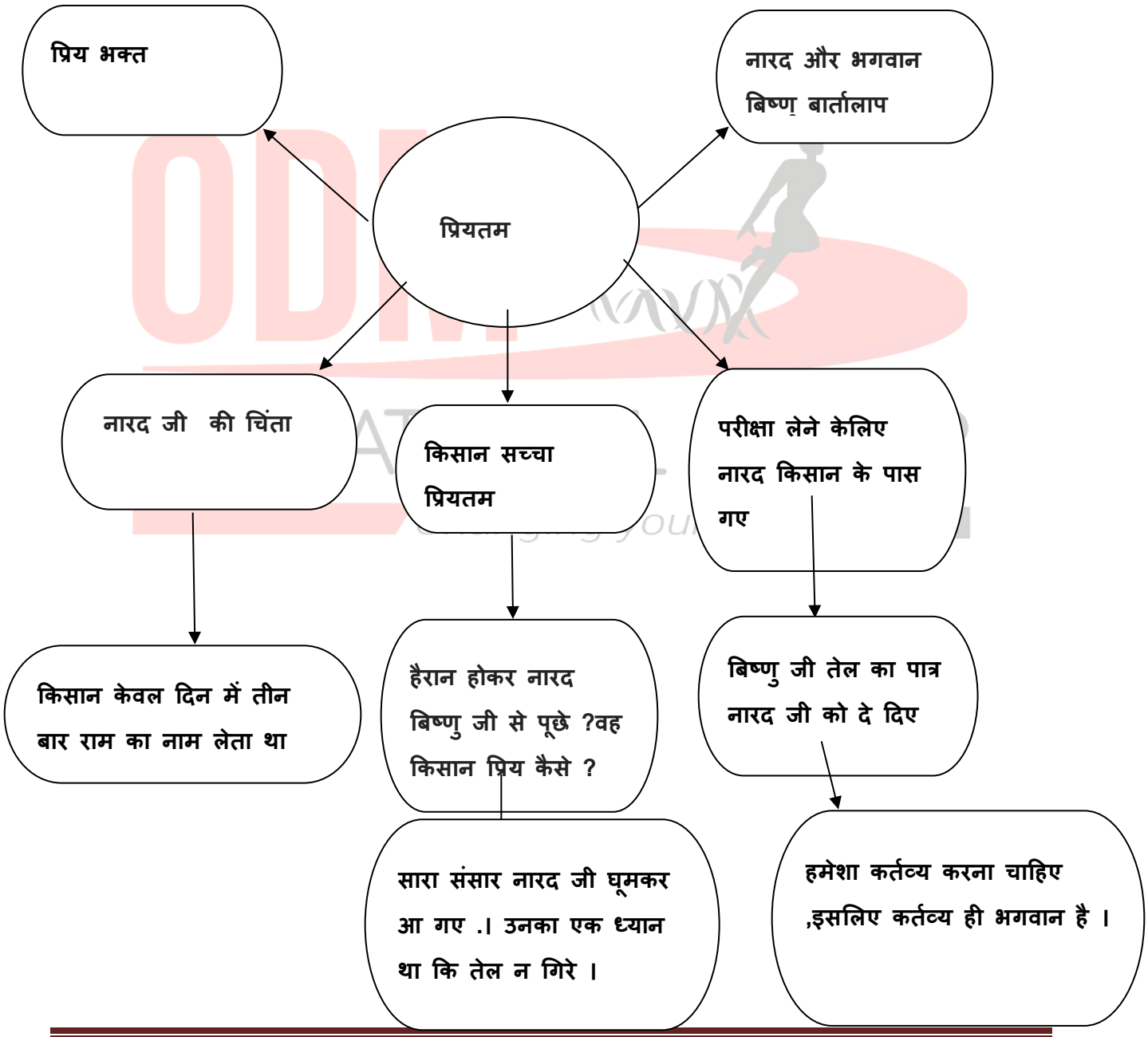

पाठ प्रवेश

प्रियतम' कविता के रचयिता सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हैं। प्रस्तुत कविता में कवि ने विष्णु और नारद से संबंधित एक पौराणिक कथा के माध्यम से यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि जीवन में अपने कर्तव्यों तथा उत्तरदायित्वों को निभाने वाला व्यक्ति ही श्रेष्ठ है तथा वही ईश्वर को प्रिय है। ईश्वर के दव्ारा दिए गए उत्तरदायित्वों को निभाते हुए ईश्वर को याद करना हिं असली भक्ति है। अर्थात जो व्यक्ति अपना कार्य छोड़कर ईश्वर की भक्ति करने में लगा रहता है वह असली भक्त नहीं होता है बल्कि अपने कार्य को करते-करते जो ईश्वर की भक्ति करता है वही असली भक्त होता है।

पाठ सार

प्रस्तुत 'प्रियतम' नामक प्रेरणादायी कविता में एक कर्मठ किसान और प्रतिक्षण नारायण नाम का स्मरण करने वाले नारद मुनि के बारे में बताया गया है।

एक बार नारद मुनि ने भगवान विष्णु से पूछा कि उनका सर्वाधिक प्रिय भक्त कौन है? भगवान विष्णु ने एक किसान को अपना प्रिय भक्त बताया, जो दिन में केवल तीन बार ही 'राम जी' का नाम लेता था। नारद मुनि उसकी परीक्षा लेने पृथ्वीर्लोक पहुँचे। वापस बैकुंठ धाम पहुँचने पर भगवान विष्णु ने उन्हें एक तैलपूर्ण पात्र देकर भूमंडल की परिक्रमा करने का आदेश दिया और कहा कि इस पात्र से एक बूँद भी तेल न गिरने पाए। परिक्रमा से लौटे नारद से विष्णु भगवान ने पूछा- “तेल-पात्र लेकर भूमंडल की परिक्रमा करते समय उन्होंने कितनी बार अपने इष्ट का नाम लिया?" नारद ने कहा कि एक बार भी नहीं, क्योंकि उन्हें जो कार्य दिया गया था, उसी में उनका ध्यान लगा रहा। भगवान विष्णु ने उन्हें समझाया कि किसान भी सांसारिक दायित्वों का निर्वाह कर रहा है, फिर भी दिन में तीन बार अपने इष्ट का नाम लेता है।

इसलिए वह मेरा सर्वाधिक प्रिय भक्त है। इस प्रकार नारद ने कर्म का महत्त्व समझा।

****

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow